भारत में कृषि पर आधारित उद्योग का विकास समस्यायें व संभावनायें

डॉ. शक्ति जैन
प्राध्यापक - अर्थशास्त्र
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

भारतीय अर्थव्यवस्था अति प्राचीनकाल से ही कृषि आधारित रही हैं पिछले दो-तीन दशकों में देश में औद्योगिक प्रगति तेजी से हुई है परन्तु वह कृषि के महत्व को कम नहीं कर सकी है क्योंकि भारत एक कृषि प्रधान देश तथा भारत की 70 प्रतिशत जनसंख्या गांवों में निवास करती है तथा लगभग 60 प्रतिशत जनसंख्या कृषि पर आश्रित है इसलिए आज भी भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है भारतीय अर्थव्यवस्था हो या जनजीवन सभी कृषि के इर्द-गिर्द ही चक्कर काटते नजर आते हैं।

कृषि भारतीय अर्थव्यवस्था की रीढ़ है भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है। गाँवों का विकास करना है तो कृषि का विकास करना आवश्यक है। कृषि विकास एक गुणक की तरह कार्य करता है कृषि से कृषकों की आय में वृद्धि होती है जिससे औद्योगिक वस्तु की माँग बढ़ती है औद्योगिक वस्तु का बाजार बढ़ता है तथा सम्पूर्ण बाजार का विस्तार होता है और अर्थव्यवस्था सुदृढ़ होती है। भारत में कृषि राष्ट्रीय आय का महत्वपूर्ण स्रोत है, तथा इतनी विशाल जनसंख्या के लिए खाद्यान्न की पूर्ति कृषि से होती है, उद्योग क्षेत्रों को कच्चामाल कृषि से ही मिलता है रोजगार की दृष्टि से कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है आज भी कुल श्रमशक्ति का 58.2 प्रतिशत को रोजगार कृषि व कृषि से संबंधित व्यवसाय से मिल रहा है कृषि देश के आर्थिक विकास का आधार है, कृषि से यातायात के साधनों का विकास, आन्तरिक व्यापार का विकास, परिवहन का विकास, बैंकों का विकास होता है तथा विदेशी मुद्रा अर्जित करने में भी कृषि का महत्वपूर्ण स्थान है राजनैतिक दृष्टि व अन्तर्राष्ट्रीय दृष्टि से कृषि की महत्वपूर्ण भमिका है केन्द्र व राज्य सरकारों को भी कृषि से पर्याप्त आय प्राप्त होती है। सब्जी व खाद्यान्नों में विशेषकर गेहूँ व धान उत्पादन में भारत का विश्व में दूसरा स्थान है। इस तरह भारतीय अर्थव्यवस्था में कृषि का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए कृषि विकास वर्तमान सरकार का मुख्य उद्देश्य दिखाई दे रहा है। वर्तमान बजट 2015-16 को किसानों का बजट कहा जाये तो अतिश्योक्ति न होगी।

भारतीय अर्थव्यवस्था की संरचना में कृषि प्राथमिक क्षेत्र की रीढ़ है। फिर भी कृषि क्षेत्र की कई सममस्यायें हैं जैसे -

1. सकल घरेलू उत्पाद में कृषि क्षेत्र का प्रतिशत घटना, 1950-51 में 65.5 प्रतिशत था तथा 2004-05 में यह 19 प्रतिशत था तथा 2012-13 में यह लगभग 14 प्रतिशत रह गया है। यद्यपि अर्थव्यवस्था में कृषि क्षेत्र का घटता प्रतिशत प्राथमिक क्षेत्र से द्वितीयक क्षेत्र एवं तृतीयक क्षेत्र में बदलते हुए योगदान को दर्शाता है जो कि अर्थव्यवस्था के विकास का संकेतक है।
2. जनससंख्या में वृद्धि के कारण कृषि में लगी हुई वास्तविक जनसंख्या में बढ़ोत्तरी हुई है जबकि कृषि में प्रयुक्त भूमि (क्षेत्र) में कोई वृद्धि नहीं हुई है बल्कि कमी आयी है। इसलिए आज भी कृषि में अल्परोजगार, प्रच्छन्न बेरोजगारी जैसी समस्यायें बढ़ रहीं है।

3. निर्यात में कृषि का महत्वपूर्ण योगदान है वह भी कम हुआ है 1950-51 में यह लगभग 50 प्रतिशत था जो वर्तमान में कृषि उत्पादों का निर्यात में योगदान केवल 15 प्रतिशत है यद्यपि इसके कई कारण हैं जैसे - बढ़ती जनसंख्या के लिए खाद्यान्न पूर्ति करना, नयी-नयी तकनीक का न अपनाना विश्व बाजार प्रतियोगिता का सामना करना, प्रमाणित वस्तु न बना पाना आदि। मानसून पर निर्भरता, कभी सूखा कभी अत्यधिक वर्षा होना इसके अतिरिक्त कृषि की कुछ समस्यायें ऐसी हैं जो पुराने समय से चली आ रही हैं जैसे सिचाई सुविधाओं की कमी, वित्त की कमी, किसानों का ऋणग्रस्त होना, नई तकनीक की जानकारी न होना खेत का छोटे-छोटे भागों में बट जाना, कृषि उत्पाद का उचित मूल्य न मिल पाना आदि।

कृषि विकास के लिए नई तकनीक से जुड़े उद्योग धंधे

कृषि विकास व गाँव विकास के लिए आवश्यक है कि कृषक केवल कृषि पर निर्भर न रहे बल्कि कृषि से जुड़े अन्य उद्योग-धंधे अपनाये। कृषि पर आधारित रोजगार के नये साधन में लगे। वर्तमान समय में युवा केवल कृषक बनकर आय प्राप्त नहीं कर सकता। भारत देश युवा देश है तथा वर्तमान युग ज्ञान व कौशल का युग है अतः गांव का युवा वर्ग कृषि व कृषि से जुड़े उद्योग-धंधों को नई-नई तकनीक से कर अपनी आय में वृद्धि कर सकता है कृषि से सम्बन्धित उद्योग धंधे अपनाये जैसे -

1. फलों और सब्जियों पर आधारित व्यवसाय

यह व्यवसाय एक लाभप्रद व्यवसाय है फल और सब्जियों का सही संरक्षण एवं वैज्ञानिक प्रसंस्करण करके उसे राष्ट्रीय एवं विदेशी बाजारों में बेचकर ग्रामीण युवक घर बैठे अच्छी आय प्राप्त कर सकते हैं। क्योंकि सीजन में फल और सब्जियाँ बहुत मात्र में आती हैं उस समय उचित भण्डारण प्रसंस्करण के अभाव में नष्ट हो जाती हैं उस समय उनका संरक्षण कर लाभ कमाया जा सकता है जैसे - ब्रोकली चाईनीज पत्ता गोभी, बटन गोभी, विभिन्न रंगों वाली शिमला मिर्च आदि प्रचलित सब्जियों के अलावा कुछ नई तरह की सब्जियाँ जिनकी बाजार में माँग है व अधिक मूल्य मिलता है उन्हें उगाकर घरेलू बाजारों में ही नहीं बल्कि विदेशी बाजार में भी भेजा जा सकता है।

2. वन व औषधियों का उत्पादन से रोजगार

वन औषधियों की वर्तमान समय में देश व विदेश दोनों में बहुत माँग है अतः इनका उत्पादन कर आय व रोजगार दोनों को बढ़ाया जा सकता है देश में बहुत सी आयुर्वेदिक संस्थायें डाबर, हिमालया, झंडु, बैद्यनाथ, हिमानी आदि औषधिक पौधों व उसमें प्राप्त उत्पादों को खरीदने के लिए तत्पर है इसमें सफेद मूसली, मुश्कदाना, सोनामुखी, अश्वगंधा, तुलसी, ईसबगोल, बच, कुनैन, कमलगट्टा, सतावर, सदाबहार, घृतकुमारी आदि औषधीय पौधों की बहुत मांग है। आज चीन देश वन औषधियों को बेचकर विश्व अग्रणी निर्यातक देश वन गया है। अतः इन वन औषधियों का उत्पादन कर भारतीय कृषक एक अच्छी आय सृजन कर सकता है।

3. वागवानी से जुड़ा व्यवसाय

फलों एवं सब्जियों के अलावा फूलों की खेती वर्तमान में एक अच्छा व्यवसाय है गुलाब, गेंदा, रजनीगंधा, वेला, मोंगरा तथा सजावटी पौधे कैक्टस, क्रोटन, बोनसई आदि का उत्पादन वर्तमान में लाभप्रद है। सरकार की एक योजना राष्ट्रीय बागवानी मिशन है इसके अन्तर्गत सरकार 50 से 70 अनुदान भी देती है तथा किसान कॉल सेंटर में किसान कृषि विशेषज्ञों से टोल फ्री नंबर 1551 पर बात भी कर सकते हैं। अच्छे संस्थानों से किसानों को वीज अथवा पौधे प्राप्त कर नर्सरी बनाने का धंधा भी किया जा सकता है इस तरह ग्रामीण युवाओं के लिए एक अच्छा, रोचक व लाभप्रद व्यवसाय हो सकता है।

4. बीज उत्पादन का व्यवसाय

बीज कृषि कार्य के लिए सर्वाधिक महत्वपूर्ण वस्तु है और अधिक उत्पादन में बीजों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है इसके लिए राष्ट्रीय बीज निगम, भारतीय राज्य फार्म निगम की स्थापना की गयी है। आज देश में लगभग 4 मिलियन टन से भी अधिक उपयुक्त बीज की आवश्यकता है परन्तु बीज बहुत ही कम मात्रा में बन पाता है अतः कुछ युवा मिलकर अपना समूह बनाकर बीज निर्माण जैसा कार्य भी कर सकते हैं इस तरह एक आकर्षक रोजगार प्राप्त कर आय प्राप्त कर सकते हैं।

5. जैविक खाद का निर्माण

आज रासायनिक खादों से कृषि की दुर्दशा व मानव स्वास्थ्य पर उसके दुष्प्रभाव से सभी परिचित हैं अतः गांव में जैविक खाद, वर्मी कम्पोस्ट, रासायनिक कीटनाशी दवाओं के स्थान पर जैव कीटनाशी जैसे नीम एवं गोमूत्र आदि का उपयोग कर बना सकते हैं वह एक आय का अच्छा स्त्रेत उनके लिए बन सकता है।

6. कृषि से सम्बन्धित अन्य व्यवसाय जैसे दुग्ध उत्पादन से व्यवसाय कृषक एक दो पशु पालकर कृषि के साथ दुग्ध उत्पादन का व्यवसाय कर सकते हैं, दूध के अन्य उत्पाद बना कर आय प्राप्त कर सकते हैं। कुक्कुट व मधुमक्खी पालन का व्यवसाय भी कृषि के साथ किया जा सकता है। कृषि सम्बन्धी आधुनिक यंत्रों को खरीदकर किराये पर देकर आय प्राप्त कर सकते हैं। लघु मिलों की स्थापना दो चार व्यक्ति मिलकर कर सकते हैं जैसे दाल मिल, चूडा मिल, आदि व्यवसाय भी कृषि के साथ किया जा सकता है।

इस तरह वर्तमान में आवश्यकता है कि कृषि में केवल खेती न कर साथ में अन्य छोटा व्यवसाय कर तथा कृषि के अलावा छोटे व कुटीर उद्योग भी घर में चलाये जा सकते हैं फसल बोने व काटने के बीच के समय का उपयोग करना होगा वह किसान के हित में होगा अल्पबेरोजगारी व छिपी बेरोजगारी को दूर करेगा तथा देश के आर्थिक स्थिति को मजबूत करेगा।

कृषि उद्योग की या कृषि से सम्बन्धित उद्योग की बहुत सी समस्यायें हैं इसके लिए किसानों को प्रशिक्षण देना आवश्यक है तथा गांवों में स्कूल स्तर से ही उन्हें कृषि व कृषि सम्बन्धित व्यवसायों की शिक्षा एक विषय के रूप में अवश्य देना होगी किसान प्रशिक्षित होगा, जागरूक होगा तभी कृषि विकास के लिए सरकार के द्वारा लागू योजनाओं का लाभ उठा सकेगा। वर्तमान में किसान आत्महत्या कर रहें हैं यह एक बड़ा विचारणीय प्रश्न है इसके लिए सरकार को इस तरह की किसानों के प्रति मनोवृत्ति उत्पन्न करनी होगी कि किसान कृषि के अलावा निश्चित ही अन्य व्यवसाय करें यदि किसी वर्ष फसल कम हुई या न हुई तो उसे अन्य व्यवसाय से आय प्राप्त हो वर्तमान में अभी अप्रैल 2016 में फसल बीमा योजना लागू की है जो कि किसानों के लिए बहुत ही अच्छी योजना है। इसके अलावा भी सरकार कृषि व कृषकों के लिए बहुत सुविधा दे रही है बहुत सारी कृषि सम्बन्धी योजनायें हैं परन्तु आवश्यकता है कि किसान इससे लाभ उठायें उसे इन योजनाओं की सही-सही जानकारी प्राप्त हो जाये।

सन्दर्भ

1. कृषि अर्थशास्त्र - डॉ. आर.के. गोविल, डॉ. एस. दयाल।
2. भारतीय आर्थिक नीति - पी.डी. माहेश्वरी एवं गुप्ता।
3. भारतीय अर्थशास्त्र - डॉ. मामोरिया एवं डॉ. जैन।
4. कुरूक्षेत्र - मई, जून 2014 मार्च 2016
5. योजना - मार्च 2016